वास्तव में ऐतिहासिक लेखनों में इन्हीं दो विचारो को अपने-2 ढंग से रखने की चेष्टा की गई है। हमें इस प्रश्न का संतुलित विश्लेषण कर

वैज्ञानिक निष्कर्ष निकालने होंगे

1757 के बाद इस रूप में जो परिवर्तन दिखायी पड़ता है, उसे ही औपनिवेशिक व्यवस्था (colonial system) के रूप में परिभाषित किया जाता है। प्रश्न यह उठता है कि इस औपनिवेशिक व्यवस्था से हमारा तात्पर्य क्या है क्या उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद एक दूसरे के पूरक है, इस रूप में उपनिवेशवाद की सामान्य विशेषताएँ क्या है। उपनिवेशवाद किस हद तक निरंतरता के तत्वों का प्रतिनिधित्व करता है, क्या उपनिवेशवाद को एक बिलकुल नई आर्थिक संरचना मानी चाहिए, अगर यह एक नई आर्थिक संरचना है तो क्या हम औपनिवेशिक उत्पादन प्रणाली को परिभाषित कर सकते है, अगर कर सकते है तो किस रूप में! यह भी कि, क्या पूरे औपनिवेशिक काल में उपनिवेशवाद का स्वरूप एक ही रहता है अथवा नई आवश्यकताएँ परिवर्तन के नई तत्वो को जन्म देती है अगर देती है तो उपनिवेशवाद के अलग-2 चरणो का स्वरूप क्या है ये अलग-2

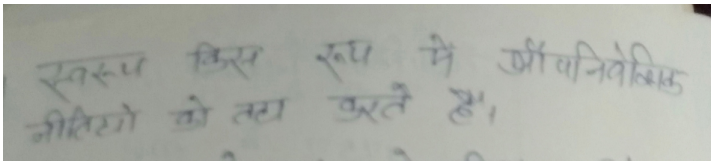

स्वरूप किस रूप में औपनिवेशिक नीतियो को तय करते हैं।